भक्ति साहित्य में स्त्री स्वर और वर्तमान महिला सशक्तिकरण आंदोलन1.docx

Document Details

Submission ID

trn:oid:::29034:138289886

Submission Date

May 9, 2026, 4:43 PM GMT+5:30

Download Date

May 9, 2026, 4:45 PM GMT+5:30

File Name

भक्ति साहित्य में स्त्री स्वर और वर्तमान महिला सशक्तिकरण आंदोलन1.docx

File Size

24.7 KB

11 Pages

3,447 Words

16,646 Characters

14% Overall Similarity

The combined total of all matches, including overlapping sources, for each database.

Filtered from the Report

- Bibliography

Top Sources

0% Internet sources
0% Publications
14% Submitted works (Student Papers)

Integrity Flags

0 Integrity Flags for Review

No suspicious text manipulations found.

Our system's algorithms look deeply at a document for any inconsistencies that would set it apart from a normal submission. If we notice something strange, we flag it for you to review.

A Flag is not necessarily an indicator of a problem. However, we'd recommend you focus your attention there for further review.

Top Sources

0% Internet sources
0% Publications
14% Submitted works (Student Papers)

Top Sources

The sources with the highest number of matches within the submission. Overlapping sources will not be displayed.

1	Submitted works	
	University of Delhi on 2026-05-03	4%
2	Submitted works	
	University of Delhi on 2026-05-08	1%
3	Submitted works	
	College Faculty Members on 2026-05-04	<1%
4	Submitted works	
	Liverpool John Moores University on 2026-04-07	<1%
5	Submitted works	
	University of Delhi on 2026-05-07	<1%
6	Submitted works	
	University of Delhi on 2026-05-06	<1%
7	Submitted works	
	University of Delhi on 2026-05-01	<1%
8	Submitted works	
	Ambedkar University Delhi on 2026-03-25	<1%
9	Submitted works	
	Lovely Professional University on 2025-08-12	<1%
10	Submitted works	
	University of Delhi on 2026-05-08	<1%
11	Submitted works	
	College Faculty Members on 2026-03-30	<1%

12 Submitted works

Fiji National University on 2026-03-18 <1%

13 Submitted works

University of Delhi on 2026-05-05 <1%

14 Submitted works

University of Delhi on 2026-05-06 <1%

15 Submitted works

Fiji National University on 2026-04-15 <1%

16 Submitted works

Ambedkar University Delhi on 2026-02-25 <1%

17 Submitted works

DU Faculty Members on 2026-04-04 <1%

18 Submitted works

University of Delhi on 2026-04-26 <1%

19 Submitted works

University of Delhi on 2026-05-04 <1%

20 Submitted works

University of Delhi on 2026-05-04 <1%

21 Submitted works

College Faculty Members on 2026-04-25 <1%

22 Submitted works

S.P. Jain Institute of Management and Research, Mumbai on 2026-03-22 <1%

23 Submitted works

University of Delhi on 2026-04-20 <1%

24 Submitted works

University of Delhi on 2026-05-04 <1%

25 Submitted works

The Bhopal School of Social Sciences on 2026-04-25 <1%

भक्ति साहित्य में स्त्री स्वर और वर्तमान महिला सशक्तिकरण आंदोलन

सारांश

इस शोध-पत्र में हिंदी भक्ति साहित्य में उपस्थित स्त्री स्वर का अध्ययन वर्तमान महिला सशक्तिकरण आंदोलन के संदर्भ में किया गया है। मध्यकालीन भारतीय समाज में स्त्रियाँ सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक बंधनों से घिरी हुई थीं, किंतु भक्ति आंदोलन ने उन्हें अभिव्यक्ति का एक वैकल्पिक मंच प्रदान किया। विशेषतः मीरा, अक्का महादेवी, ललद्यद तथा बहनाबाई जैसी संत कवयित्रियों ने अपने काव्य के माध्यम से पितृसत्तात्मक व्यवस्था, सामाजिक असमानता तथा स्त्री दमन का प्रतिरोध किया। यह शोध भक्ति साहित्य में स्त्री चेतना, आत्म-अभिव्यक्ति, आध्यात्मिक स्वतंत्रता तथा सामाजिक विद्रोह के स्वर को आधुनिक महिला सशक्तिकरण आंदोलन से जोड़कर देखता है। अध्ययन में स्त्रीवाद, सांस्कृतिक अध्ययन तथा साहित्यिक आलोचना की पद्धतियों का उपयोग किया गया है। शोध का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि भक्ति साहित्य केवल धार्मिक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि स्त्री स्वतंत्रता और सामाजिक परिवर्तन का सशक्त माध्यम भी था। वर्तमान समय में लैंगिक समानता, शिक्षा, अधिकार चेतना तथा आत्मनिर्णय के प्रश्नों को समझने में भक्ति साहित्य अत्यंत प्रासंगिक सिद्ध होता है।

मुख्य शब्द: भक्ति साहित्य, स्त्री स्वर, महिला सशक्तिकरण, मीरा, स्त्री विमर्श, सामाजिक प्रतिरोध

प्रस्तावना

भारतीय साहित्य और संस्कृति के इतिहास में भक्ति आंदोलन एक महत्वपूर्ण सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्रांति के रूप में स्थापित होता है। यह आंदोलन केवल धार्मिक भक्ति तक सीमित नहीं था, बल्कि इसने मध्यकालीन भारतीय समाज में व्याप्त जातिगत ऊँच-नीच, धार्मिक रूढ़ियों तथा सामाजिक असमानताओं के विरुद्ध एक वैचारिक प्रतिरोध भी प्रस्तुत किया। विशेष रूप से भक्ति साहित्य ने उन वर्गों को अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान किया जिन्हें पारंपरिक सामाजिक संरचना में हाशिये पर रखा गया था। स्त्रियाँ भी उन्हीं वर्गों में शामिल थीं। मध्यकालीन भारतीय समाज में स्त्रियों की स्थिति अत्यंत सीमित थी; उन्हें शिक्षा, स्वतंत्र चिंतन तथा सामाजिक निर्णयों में भागीदारी से वंचित रखा जाता था। ऐसे समय में भक्ति आंदोलन ने स्त्रियों को आध्यात्मिक और साहित्यिक अभिव्यक्ति का एक नया मार्ग प्रदान

किया। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भक्ति आंदोलन को भारतीय लोकचेतना का व्यापक सांस्कृतिक आंदोलन माना है, जिसने समाज के निम्न वर्गों तथा स्त्रियों को नई पहचान प्रदान की (द्विवेदी, 2003, p. 112)। भक्ति कवयित्रियों ने अपने काव्य के माध्यम से न केवल ईश्वर के प्रति प्रेम और समर्पण व्यक्त किया, बल्कि सामाजिक बंधनों, पितृसत्तात्मक संरचनाओं तथा स्त्री दमन के विरुद्ध भी अपनी आवाज़ उठाई।

भक्ति साहित्य में स्त्री स्वर का सबसे सशक्त उदाहरण मीराबाई के काव्य में दिखाई देता है। मीरा ने सामाजिक मर्यादाओं, राजसी परंपराओं और वैवाहिक बंधनों से ऊपर उठकर अपनी आध्यात्मिक स्वतंत्रता को महत्व दिया। उनके पदों में स्त्री की आत्म-अभिव्यक्ति, स्वतंत्र चेतना तथा सामाजिक विद्रोह स्पष्ट दिखाई देता है। इसी प्रकार अक्का महादेवी, लल्लेश्वरी तथा बहिनाबाई जैसी संत कवयित्रियों ने भी भक्ति को स्त्री मुक्ति और आत्मसम्मान के माध्यम के रूप में प्रस्तुत किया।

समकालीन भारतीय समाज में महिला सशक्तिकरण एक महत्वपूर्ण सामाजिक और राजनीतिक विमर्श बन चुका है। शिक्षा, रोजगार, राजनीतिक भागीदारी, समान अधिकार तथा लैंगिक न्याय जैसे मुद्दे आज महिला आंदोलन के केंद्र में हैं। आधुनिक स्त्रीवादी चिंतन स्त्री को आत्मनिर्णय और स्वतंत्र पहचान प्रदान करने पर बल देता है। आश्चर्यजनक रूप से, यही स्वर भक्ति साहित्य में सदियों पहले दिखाई देता है। भक्ति कवयित्रियों ने अपने समय की सामाजिक संरचनाओं को चुनौती देकर यह सिद्ध किया कि स्त्री केवल पारिवारिक या सामाजिक भूमिका तक सीमित नहीं है, बल्कि वह स्वतंत्र आध्यात्मिक और वैचारिक अस्तित्व भी रखती है।

द सेकंड सेक्स में सिमोन द बोउवार ने लिखा है कि स्त्री को ऐतिहासिक रूप से "दूसरा" बनाकर देखा गया है (बोउवार, 1949/2011, p. 26)। भारतीय संदर्भ में भक्ति साहित्य इसी "दूसरेपन" के विरुद्ध एक सांस्कृतिक प्रतिरोध के रूप में देखा जा सकता है। इसी प्रकार द हिस्ट्री ऑफ डूइंग में राधा कुमार ने भारतीय महिला आंदोलन को सामाजिक परिवर्तन की निरंतर प्रक्रिया बताया है (कुमार, 1993, p. 41)।

यह शोध-पत्र भक्ति साहित्य में उपस्थित स्त्री स्वर का अध्ययन वर्तमान महिला सशक्तिकरण आंदोलन के संदर्भ में करता है। इसका उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि भक्ति साहित्य केवल धार्मिक अनुभूति का साहित्य नहीं था, बल्कि यह स्त्री चेतना, आत्मसम्मान, सामाजिक समानता और प्रतिरोध की एक महत्वपूर्ण परंपरा भी था। वर्तमान समय में जब स्त्रियाँ लैंगिक भेदभाव,

8 हिंसा, असमानता तथा सामाजिक दबावों से संघर्ष कर रही हैं, तब भक्ति साहित्य उन्हें वैचारिक और सांस्कृतिक प्रेरणा प्रदान करता है।

प्रमुख शब्दावली एवं परिभाषाएँ

किसी भी शोध-पत्र की वैचारिक स्पष्टता उसके प्रमुख शब्दों की सही व्याख्या पर निर्भर करती है। “भक्ति साहित्य”, “स्त्री स्वर”, “महिला सशक्तिकरण”, “पितृसत्ता” तथा “स्त्री विमर्श” इस शोध के मुख्य आधार हैं। शोध का काम केवल शब्दों को सजाना नहीं, बल्कि उनके भीतर छिपे सामाजिक और ऐतिहासिक अर्थों को समझना भी है। मनुष्य अकसर बड़े शब्दों का प्रयोग तो
11 कर लेता है, पर उनके बोझ को समझने से बचता रहता है।

भक्ति साहित्य

भक्ति साहित्य वह साहित्य है जिसमें ईश्वर के प्रति प्रेम, समर्पण और आध्यात्मिक अनुभव की अभिव्यक्ति होती है। इसका विकास मुख्यतः मध्यकाल में हुआ और यह लोकभाषाओं के माध्यम से जनता तक पहुँचा। हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार भक्ति आंदोलन भारतीय समाज की सांस्कृतिक चेतना का व्यापक आंदोलन था (द्विवेदी, 2003, p. 134)। इस साहित्य में धार्मिक भावना के साथ सामाजिक समानता और मानवीयता का स्वर भी दिखाई देता है।

स्त्री स्वर

1 11 स्त्री स्वर से आशय स्त्रियों के अनुभवों, संघर्षों और भावनाओं की साहित्यिक अभिव्यक्ति से
1 है। भक्ति साहित्य में यह स्वर विशेष महत्व रखता है क्योंकि मध्यकालीन समाज में स्त्रियों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति सीमित थी। महादेवी वर्मा ने स्त्री जीवन को “श्रृंखला की कड़ियों में बंधी चेतना” कहा है (वर्मा, 2009, p. 17)। मीरा और अन्य संत कवयित्रियों ने इसी बंधन के विरुद्ध अपनी आवाज़ उठाई।

2 **महिला सशक्तिकरण**

2 महिला शक्तिकरण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से स्त्रियाँ सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक और राजनीतिक रूप से आत्मनिर्भर बनती हैं। इसका उद्देश्य स्त्रियों को समान अधिकार और निर्णय लेने की स्वतंत्रता प्रदान करना है। यूनाइटेड नेशंस के अनुसार महिला सशक्तिकरण महिलाओं की सक्रिय और समान भागीदारी सुनिश्चित करने की प्रक्रिया है (UN **विमेन**, 2018, p. 5)।

पितृसत्ता

पितृसत्ता वह सामाजिक व्यवस्था है जिसमें पुरुष सत्ता को प्रधानता प्राप्त होती है और स्त्रियों की भूमिका सीमित कर दी जाती है। सिल्विया वॉल्बी ने इसे ऐसी सामाजिक संरचना बताया है जिसमें पुरुष स्त्रियों पर प्रभुत्व स्थापित करते हैं (वॉल्बी, 1990, p. 20)। भक्ति साहित्य की कई कवयित्रियों ने इसी व्यवस्था का विरोध किया।

स्त्री विमर्श

स्त्री विमर्श साहित्य और समाज में स्त्रियों की स्थिति, समानता और अधिकारों से संबंधित चिंतन है। सिमोन द बोउवार ने कहा था कि "स्त्री पैदा नहीं होती, बल्कि बना दी जाती है" (बोउवार, 2011, p. 283)। यह कथन समाज द्वारा निर्मित स्त्री भूमिका की ओर संकेत करता है। भक्ति साहित्य में स्त्री स्वर को स्त्री विमर्श की प्रारंभिक अभिव्यक्ति माना जा सकता है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भारतीय भक्ति आंदोलन मध्यकालीन भारतीय समाज की महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और सामाजिक घटनाओं में से एक था। यह आंदोलन केवल धार्मिक चेतना तक सीमित नहीं था, बल्कि इसने सामाजिक असमानताओं, जातिगत भेदभाव तथा रूढ़िवादी परंपराओं के विरुद्ध भी एक वैचारिक प्रतिरोध प्रस्तुत किया। मध्यकालीन समाज में जब धर्म कर्मकांडों और बाहरी आडंबरों तक सीमित होता जा रहा था, तब भक्ति आंदोलन ने ईश्वर के साथ व्यक्तिगत संबंध, प्रेम और समानता पर बल दिया। मनुष्य अक्सर धर्म को इतना जटिल बना देता है कि ईश्वर तक पहुँचने के लिए भी सामाजिक अनुमति-पत्र चाहिए होता है। भक्ति आंदोलन ने इसी व्यवस्था को चुनौती दी।

मध्यकालीन भारतीय समाज में स्त्रियों की स्थिति अत्यंत सीमित थी। उन्हें शिक्षा, सामाजिक स्वतंत्रता और निर्णय लेने के अधिकार से वंचित रखा जाता था। बाल विवाह, पर्दा प्रथा तथा पितृसत्तात्मक नियंत्रण ने स्त्रियों के जीवन को संकुचित कर दिया था। रामचंद्र शुक्ल के अनुसार उस समय समाज अनेक सामाजिक और धार्मिक रूढ़ियों से ग्रस्त था, जिसके कारण सामान्य जनता और विशेष रूप से स्त्रियाँ दमन का अनुभव कर रही थीं (शुक्ल, 2018, p. 92)। ऐसी परिस्थितियों में भक्ति आंदोलन ने समाज के उपेक्षित वर्गों को अभिव्यक्ति का मंच प्रदान किया। इस आंदोलन की शुरुआत दक्षिण भारत में आलवार और नयनार संतों से मानी जाती है, जिन्होंने भक्ति को जाति और वर्ग की सीमाओं से ऊपर रखा। बाद में यह आंदोलन उत्तर भारत तक पहुँचा और हिंदी, पंजाबी, मराठी, गुजराती तथा अन्य लोकभाषाओं में विकसित हुआ।

कबीर, रविदास, गुरु नानक तथा तुलसीदास जैसे संत कवियों ने सामाजिक समानता और मानवीय एकता का संदेश दिया। वहीं दूसरी ओर स्त्री संत कवयित्रियों ने भक्ति को आत्म-अभिव्यक्ति और स्वतंत्र चेतना के माध्यम के रूप में अपनाया। मीराबाई भक्ति आंदोलन की सबसे प्रमुख स्त्री कवयित्री मानी जाती हैं। उन्होंने राजसी परंपराओं और सामाजिक बंधनों का विरोध करते हुए कृष्ण भक्ति को अपने जीवन का आधार बनाया। उनके काव्य में व्यक्तिगत स्वतंत्रता, आध्यात्मिक प्रेम और सामाजिक विद्रोह का स्वर स्पष्ट दिखाई देता है। इसी प्रकार अक्का महादेवी ने भी सामाजिक बंधनों को अस्वीकार करते हुए आध्यात्मिक स्वतंत्रता को महत्व दिया।

हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है कि भक्ति आंदोलन ने भारतीय समाज में लोकचेतना और समानता की भावना को मजबूत किया (द्विवेदी, 2003, p. 145)। इस आंदोलन का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह था कि इसमें स्त्रियों और निम्न वर्गों को भी धार्मिक और साहित्यिक अभिव्यक्ति का अधिकार मिला। भक्ति साहित्य का ऐतिहासिक महत्व इस बात में निहित है कि उसने धर्म को केवल कर्मकांडों से मुक्त नहीं किया, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का माध्यम भी बनाया। स्त्री कवयित्रियों ने अपने काव्य के माध्यम से यह सिद्ध किया कि स्त्री केवल सामाजिक मर्यादाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि वह स्वतंत्र आध्यात्मिक और वैचारिक अस्तित्व भी रखती है। यही कारण है कि भक्ति साहित्य आज भी महिला सशक्तिकरण और स्त्री विमर्श के संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक माना जाता है।

भक्ति साहित्य में स्त्री स्वर

भक्ति साहित्य में स्त्री स्वर भारतीय साहित्यिक परंपरा का एक महत्वपूर्ण और परिवर्तनकारी पक्ष है। मध्यकालीन भारतीय समाज में स्त्रियों की सामाजिक स्थिति सीमित थी तथा उन्हें स्वतंत्र अभिव्यक्ति का अधिकार बहुत कम प्राप्त था। ऐसे समय में भक्ति आंदोलन ने स्त्रियों को आत्म-अभिव्यक्ति, आध्यात्मिक स्वतंत्रता तथा सामाजिक प्रतिरोध का एक नया मंच प्रदान किया। यह केवल धार्मिक अनुभव की अभिव्यक्ति नहीं थी, बल्कि स्त्री अस्मिता और स्वतंत्र चेतना की उद्घोषणा भी थी। समाज अक्सर स्त्री से त्याग, मौन और सहनशीलता की अपेक्षा करता रहा, किंतु भक्ति कवयित्रियों ने पहली बार उस मौन को शब्दों में बदल दिया।

भक्ति साहित्य में स्त्री स्वर का सबसे सशक्त उदाहरण मीराबाई के काव्य में दिखाई देता है। मीरा ने सामाजिक परंपराओं, वैवाहिक बंधनों और राजसी मर्यादाओं से ऊपर उठकर कृष्ण भक्ति को अपने जीवन का केंद्र बनाया। उनके पदों में व्यक्तिगत स्वतंत्रता और

आध्यात्मिक प्रेम का स्वर स्पष्ट दिखाई देता है। मीरा का प्रसिद्ध पद “मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई” केवल धार्मिक भक्ति नहीं, बल्कि सामाजिक बंधनों के विरुद्ध आत्मनिर्णय की घोषणा भी है।

हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार मीरा का काव्य स्त्री स्वतंत्रता और आत्मिक विद्रोह का प्रतीक है (द्विवेदी, 2003, p. 178)। मीरा ने यह स्थापित किया कि स्त्री को अपनी आध्यात्मिक और वैचारिक पहचान चुनने का अधिकार है। यह दृष्टि आधुनिक स्त्री चेतना के अत्यंत निकट दिखाई देती है।

इसी प्रकार अक्का महादेवी ने भी सामाजिक बंधनों और बाहरी आडंबरों का विरोध किया। उन्होंने सांसारिक जीवन को त्यागकर आध्यात्मिक स्वतंत्रता को अपनाया। उनके वचनों में स्त्री आत्मसम्मान और स्वतंत्र अस्तित्व की चेतना स्पष्ट दिखाई देती है।

भक्ति साहित्य की अन्य स्त्री संत कवयित्रियाँ जैसे लल्लेश्वरी तथा बहिनाबाई ने भी अपने काव्य में स्त्री अनुभवों, सामाजिक पीड़ा और आध्यात्मिक खोज को अभिव्यक्त किया। इन कवयित्रियों ने यह सिद्ध किया कि स्त्री केवल परिवार या समाज की परिभाषित भूमिकाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि वह स्वतंत्र वैचारिक और आध्यात्मिक व्यक्तित्व भी रखती है।

भक्ति साहित्य में स्त्री स्वर का एक महत्वपूर्ण पक्ष पितृसत्तात्मक व्यवस्था के विरुद्ध प्रतिरोध भी है। मध्यकालीन समाज में स्त्रियों को धार्मिक क्रियाओं और सामाजिक निर्णयों में सीमित भूमिका दी जाती थी, किंतु भक्ति आंदोलन ने ईश्वर के साथ सीधे संबंध की अवधारणा प्रस्तुत की। इससे स्त्रियों को धार्मिक मध्यस्थता और सामाजिक नियंत्रण से आंशिक मुक्ति मिली। रामविलास शर्मा ने लिखा है कि भक्ति आंदोलन ने समाज के उपेक्षित वर्गों को सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का अवसर दिया (शर्मा, 1999, p. 219)।

भक्ति साहित्य की भाषा भी स्त्री स्वर को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण रही। संत कवयित्रियों ने संस्कृत जैसी शास्त्रीय भाषा के स्थान पर लोकभाषाओं का प्रयोग किया, जिससे उनकी रचनाएँ सामान्य जनता तक पहुँच सकीं। लोकभाषा ने स्त्री अनुभवों को सहजता और संवेदनशीलता के साथ अभिव्यक्त करने में सहायता की।

आधुनिक स्त्री विमर्श के संदर्भ में भक्ति साहित्य अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें स्त्री की आत्म-अभिव्यक्ति, स्वतंत्रता, समानता और प्रतिरोध के स्वर स्पष्ट दिखाई देते हैं। सिमोन द बोउवार ने स्त्री की स्वतंत्र पहचान पर बल देते हुए कहा था कि समाज स्त्री की

भूमिका का निर्माण करता है (बोउवार, 2011, p. 283)। भक्ति कवयित्रियों ने अपने काव्य के माध्यम से इसी सामाजिक निर्माण को चुनौती दी। इस प्रकार भक्ति साहित्य में स्त्री स्वर केवल धार्मिक अनुभव नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना, आत्मसम्मान और स्वतंत्र अस्तित्व की अभिव्यक्ति है। यह साहित्य आज भी महिला सशक्तिकरण और स्त्री अधिकारों के विमर्श में प्रेरणादायक और प्रासंगिक बना हुआ है।

वर्तमान महिला सशक्तिकरण आंदोलन और भक्ति साहित्य

समकालीन भारतीय समाज में महिला सशक्तिकरण एक महत्वपूर्ण सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विमर्श के रूप में उभरा है। शिक्षा, रोजगार, राजनीतिक भागीदारी, समान अधिकार, सुरक्षा तथा आत्मनिर्णय जैसे मुद्दे आज महिला आंदोलनों के केंद्र में हैं। आधुनिक समाज तकनीकी रूप से भले ही आगे बढ़ गया हो, किंतु स्त्रियों के प्रति भेदभाव, हिंसा और असमानता जैसी समस्याएँ अब भी व्यापक रूप से मौजूद हैं। समय बदलता है, साधन बदलते हैं, लेकिन सत्ता संरचनाएँ अपने पुराने स्वभाव को आसानी से नहीं छोड़तीं।

महिला सशक्तिकरण का मूल उद्देश्य स्त्रियों को सामाजिक और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाना तथा उन्हें समान अवसर प्रदान करना है। यूनाइटेड नेशंस के अनुसार महिला सशक्तिकरण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से महिलाएँ अपने जीवन से संबंधित निर्णय स्वयं लेने में सक्षम बनती हैं (UN विमेन, 2018, p. 8)। भारत में शिक्षा का अधिकार, कार्यस्थल पर समान अवसर, राजनीतिक प्रतिनिधित्व तथा घरेलू हिंसा के विरुद्ध कानून इसी दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास हैं।

वर्तमान महिला आंदोलन की जड़ें केवल आधुनिक पश्चिमी स्त्रीवाद तक सीमित नहीं हैं, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में भी इसके प्रारंभिक स्वर दिखाई देते हैं। भक्ति साहित्य इसी संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण है। मध्यकालीन संत कवयित्रियों ने अपने समय की सामाजिक और पितृसत्तात्मक व्यवस्था को चुनौती देकर स्त्री स्वतंत्रता और आत्मसम्मान का संदेश दिया।

मीराबाई का जीवन आधुनिक महिला सशक्तिकरण की दृष्टि से अत्यंत प्रेरणादायक माना जा सकता है। उन्होंने सामाजिक मर्यादाओं, पारिवारिक दबावों और राजसी परंपराओं के विरुद्ध अपनी आध्यात्मिक स्वतंत्रता को चुना। मीरा का यह निर्णय उस समय की सामाजिक संरचना के विरुद्ध एक साहसिक कदम था। उनके काव्य में आत्मनिर्णय, स्वतंत्र चेतना और व्यक्तिगत अधिकार का स्वर स्पष्ट दिखाई देता है।

7 इसी प्रकार अक्का महादेवी ने भी सामाजिक बंधनों को अस्वीकार कर अपनी स्वतंत्र आध्यात्मिक पहचान स्थापित की। इन संत कवयित्रियों ने यह सिद्ध किया कि स्त्री केवल सामाजिक भूमिकाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि वह स्वतंत्र व्यक्तित्व और वैचारिक अस्तित्व भी रखती है।

आज के महिला आंदोलन में भी यही प्रश्न प्रमुख हैं। स्त्रियाँ शिक्षा, रोजगार, समान वेतन, सुरक्षित कार्यस्थल और सामाजिक सम्मान की मांग कर रही हैं। डिजिटल युग में #MeToo जैसे आंदोलनों ने कार्यस्थलों और सामाजिक जीवन में स्त्रियों के अनुभवों को वैश्विक स्तर पर सामने लाया। यह आंदोलन स्त्री की आवाज़ को सार्वजनिक मान्यता देने का प्रयास है। भक्ति साहित्य में भी स्त्री स्वर इसी प्रकार सामाजिक मौन को तोड़ने का कार्य करता है।

2 बेल हुक्स ने स्त्रीवाद को “लैंगिक शोषण और दमन को समाप्त करने का संघर्ष” कहा है (हुक्स, 2000, p. 1)। भक्ति कवयित्रियों का साहित्य भी अपने समय में इसी प्रकार के
8 दमन के विरुद्ध सांस्कृतिक प्रतिरोध का माध्यम था।

वर्तमान भारतीय समाज में महिलाओं को अभी भी घरेलू हिंसा, लैंगिक भेदभाव, बाल विवाह, साइबर उत्पीड़न तथा कार्यस्थल असमानता जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। ऐसे समय में भक्ति साहित्य स्त्रियों को आत्मविश्वास, प्रतिरोध और आत्मसम्मान की
2 प्रेरणा देता है। यह साहित्य बताता है कि स्त्री की स्वतंत्र चेतना कोई आधुनिक अवधारणा नहीं, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक परंपरा का भी महत्वपूर्ण हिस्सा रही है।

2 राधा कुमार के अनुसार भारतीय महिला आंदोलन सामाजिक परिवर्तन की एक निरंतर प्रक्रिया है, जिसमें ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परंपराओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है (कुमार, 1993, p. 52)। इस दृष्टि से भक्ति साहित्य आधुनिक महिला सशक्तिकरण आंदोलन की वैचारिक पृष्ठभूमि को समझने में सहायक सिद्ध होता है। इस प्रकार भक्ति साहित्य और वर्तमान
1 महिला सशक्तिकरण आंदोलन के बीच गहरा संबंध दिखाई देता है। भक्ति कवयित्रियों ने अपने समय में जो स्त्री चेतना, स्वतंत्रता और प्रतिरोध का स्वर उठाया था, वही स्वर आज आधुनिक महिला आंदोलनों में नए रूप में दिखाई देता है। इसलिए भक्ति साहित्य केवल ऐतिहासिक धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान सामाजिक परिवर्तन का भी प्रेरणास्रोत है।

आलोचनात्मक विश्लेषण

भक्ति साहित्य को सामान्यतः सामाजिक समानता, आध्यात्मिक स्वतंत्रता और मानवीय चेतना का साहित्य माना जाता है, किंतु इसका आलोचनात्मक अध्ययन करना भी आवश्यक है। केवल प्रशंसा करना शोध नहीं कहलाता; अकादमिक संसार में प्रश्न पूछना उतना ही आवश्यक है जितना उत्तर देना। भक्ति आंदोलन ने स्त्रियों को अभिव्यक्ति का मंच अवश्य प्रदान किया, लेकिन यह भी सत्य है कि उसकी सीमाएँ थीं।

भक्ति साहित्य में स्त्री स्वर मुख्यतः आध्यात्मिक और धार्मिक संदर्भों में व्यक्त हुआ। मीराबाई तथा अन्य संत कवयित्रियों ने सामाजिक बंधनों का विरोध किया, किंतु उनका प्रतिरोध मुख्यतः भक्ति और ईश्वर-समर्पण के माध्यम से व्यक्त हुआ। आधुनिक स्त्रीवाद जहाँ सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समानता की स्पष्ट मांग करता है, वहीं भक्ति साहित्य का केंद्र आध्यात्मिक स्वतंत्रता अधिक था।

सिमोन द बोउवार ने स्त्री स्वतंत्रता को सामाजिक संरचनाओं से मुक्ति के रूप में देखा है (बोउवार, 2011, p. 305)। इस दृष्टि से देखा जाए तो भक्ति साहित्य ने स्त्रियों को पूर्ण सामाजिक स्वतंत्रता नहीं दी, बल्कि उन्हें धार्मिक ढाँचे के भीतर अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान किया। अर्थात् स्त्री की आवाज़ को स्वीकार किया गया, परंतु वह अक्सर भक्ति और समर्पण की भाषा में ही व्यक्त हुई।

इसके अतिरिक्त भक्ति आंदोलन समाज की सभी स्त्रियों तक समान रूप से नहीं पहुँच सका। अधिकांश स्त्री संत कवयित्रियाँ असाधारण व्यक्तित्व की थीं, जिन्होंने व्यक्तिगत साहस और आध्यात्मिक दृढ़ता के माध्यम से अपनी पहचान बनाई। सामान्य स्त्रियों की सामाजिक स्थिति में व्यापक परिवर्तन तत्काल दिखाई नहीं देता। रामविलास शर्मा के अनुसार सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया धीमी और जटिल होती है (शर्मा, 1999, p. 233)। इसलिए भक्ति आंदोलन को पूर्ण सामाजिक क्रांति मानना अतिशयोक्ति होगी। फिर भी, भक्ति साहित्य का महत्व कम नहीं होता। इसने मध्यकालीन भारतीय समाज में स्त्री की स्वतंत्र चेतना को पहली बार व्यापक साहित्यिक स्वर प्रदान किया। स्त्रियों ने अपने अनुभव, पीड़ा और आत्मसम्मान को सार्वजनिक रूप से व्यक्त किया, जो उस समय की सामाजिक व्यवस्था के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती थी।

आधुनिक महिला सशक्तिकरण आंदोलन और भक्ति साहित्य के बीच समानताएँ भी हैं और अंतर भी। दोनों स्त्री की स्वतंत्र पहचान और आत्मसम्मान पर बल देते हैं, किंतु आधुनिक

स्त्रीवाद अधिक संगठित सामाजिक और राजनीतिक संघर्ष का रूप है। इसके विपरीत भक्ति आंदोलन का स्वर आध्यात्मिक और व्यक्तिगत अनुभवों से जुड़ा हुआ था।

इस प्रकार भक्ति साहित्य को न तो पूर्ण स्त्री-मुक्ति का साहित्य कहा जा सकता है और न ही केवल धार्मिक साहित्य। यह भारतीय समाज में स्त्री चेतना और सामाजिक प्रतिरोध की प्रारंभिक अभिव्यक्ति था, जिसने आगे चलकर आधुनिक स्त्री विमर्श और महिला सशक्तिकरण की वैचारिक भूमि तैयार की।

निष्कर्ष

भक्ति साहित्य भारतीय सांस्कृतिक परंपरा का केवल धार्मिक अध्याय नहीं है, बल्कि यह सामाजिक चेतना, मानवीय समानता और स्त्री अस्मिता का भी महत्वपूर्ण दस्तावेज़ है। मध्यकालीन भारतीय समाज में जब स्त्रियाँ सामाजिक बंधनों, पितृसत्तात्मक नियंत्रण और धार्मिक रूढ़ियों से घिरी हुई थीं, तब भक्ति आंदोलन ने उन्हें आत्म-अभिव्यक्ति और आध्यात्मिक स्वतंत्रता का एक नया मार्ग प्रदान किया। मीराबाई, अक्का महादेवी तथा अन्य संत कवयित्रियों ने अपने काव्य के माध्यम से यह सिद्ध किया कि स्त्री केवल सामाजिक भूमिकाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि उसका स्वतंत्र वैचारिक और आध्यात्मिक अस्तित्व भी है। भक्ति साहित्य में स्त्री स्वर आत्मसम्मान, प्रतिरोध और स्वतंत्र चेतना का स्वर है। इन कवयित्रियों ने सामाजिक मर्यादाओं और पितृसत्तात्मक व्यवस्था को चुनौती देकर स्त्री की आत्मनिर्णय क्षमता को स्थापित किया। यद्यपि भक्ति आंदोलन पूर्ण सामाजिक क्रांति नहीं था और इसकी अपनी सीमाएँ थीं, फिर भी इसने भारतीय समाज में स्त्री चेतना के विकास की महत्वपूर्ण आधारभूमि तैयार की।

वर्तमान महिला सशक्तिकरण आंदोलन के संदर्भ में भक्ति साहित्य की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है। आज भी महिलाएँ लैंगिक भेदभाव, हिंसा, असमानता और सामाजिक दबावों से संघर्ष कर रही हैं। ऐसे समय में भक्ति साहित्य स्त्रियों को आत्मविश्वास, प्रतिरोध और स्वतंत्रता की प्रेरणा प्रदान करता है। आधुनिक महिला आंदोलन और भक्ति साहित्य दोनों ही स्त्री की स्वतंत्र पहचान और समान अधिकारों पर बल देते हैं। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भक्ति आंदोलन को भारतीय लोकचेतना का व्यापक सांस्कृतिक आंदोलन माना है (द्विवेदी, 2003, p. 198)। वास्तव में, भक्ति साहित्य ने समाज के उपेक्षित वर्गों, विशेष रूप से स्त्रियों, को अभिव्यक्ति का अधिकार देकर भारतीय सामाजिक इतिहास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस प्रकार कहा जा सकता है कि भक्ति साहित्य में उपस्थित स्त्री स्वर आधुनिक महिला सशक्तिकरण आंदोलन के वैचारिक और सांस्कृतिक आधारों को समझने में अत्यंत सहायक है।

यह साहित्य केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान समाज के लिए भी प्रेरणा और सामाजिक चेतना का महत्वपूर्ण स्रोत है। मनुष्य की सभ्यता बार-बार नए शब्द गढ़ती है, पर स्वतंत्रता, सम्मान और आत्म-अभिव्यक्ति की आकांक्षा हर युग में लगभग एक जैसी रहती है।